Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



कक्षा - 9

हिन्दी

कृतिका (गद्य खंड)

अध्याय-1 : इस जल प्रलय में (फणीश्वरनाथ रेणु)

भाग - 5

कुशाल सोलंकी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

विवरण (Overview)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

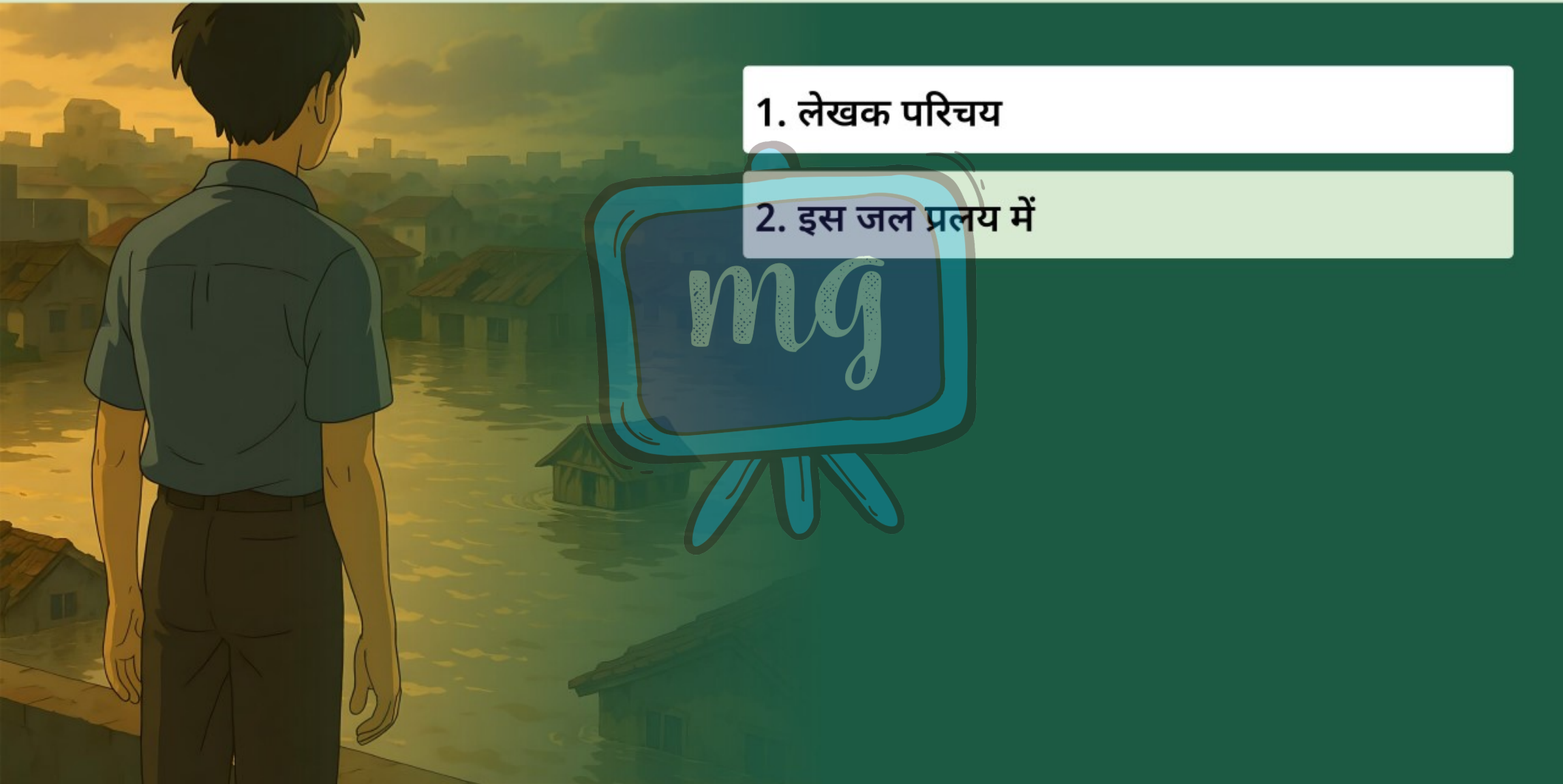

1. लेखक परिचय
2. इस जल प्रलय में

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

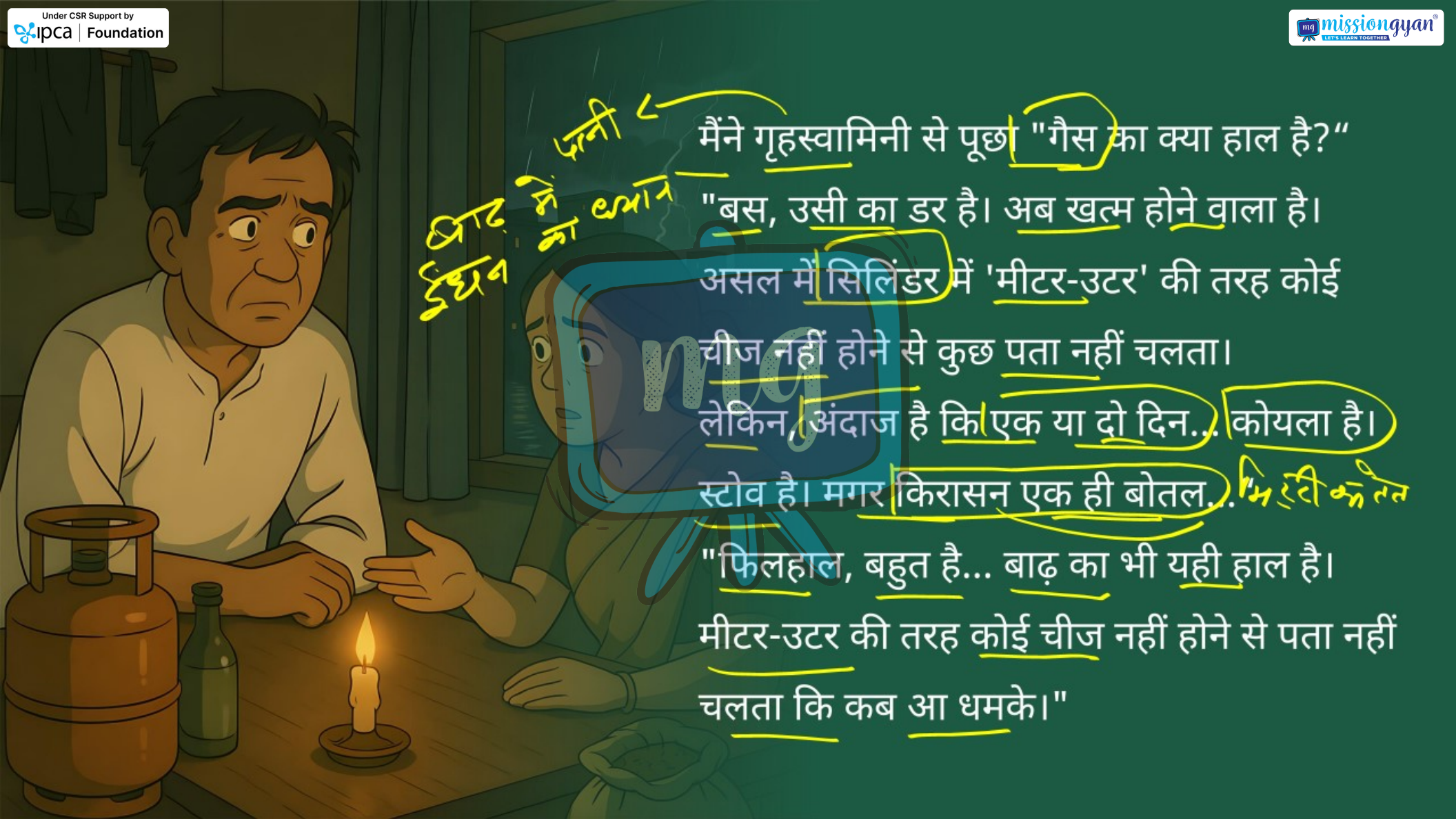

मैंने गृहस्वामिनी से पूछा "गैस का क्या हाल है?"

"बस, उसी का डर है। अब खत्म होने वाला है।

असल में सिलिंडर में 'मीटर-उटर' की तरह कोई

चीज नहीं होने से कुछ पता नहीं चलता।

लेकिन, अंदाज है कि एक या दो दिन... कोयला है।

स्टोव है। मगर किरासन एक ही बोतल...

"फिलहाल, बहुत है... बाढ़ का भी यही हाल है।

मीटर-उटर की तरह कोई चीज नहीं होने से पता नहीं

चलता कि कब आ धमके।"

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



मैंने कहा। सारे राजेंद्रनगर में ' 'सावधान-सावधान' ध्वनि कुछ देर गूँजती रही। ब्लॉक के नीचे की दुकानों से सामान हटाए जाने लगे। मेरे फ़्लैट के नीचे के दुकानदार ने, पता नहीं क्यों, इतना कागज इकट्ठा कर रखा था! एक अलाव लगाकर सुलगा दिया। हमारा कमरा धुएँ से भर गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



सारा शहर जगा हुआ है। पच्छिम की ओर कान लगाकर सुनने की चेष्टा करता हूँ... हाँ पीरमुहानी या सालिमपुरा-अहरा अथवा जनक किशोर-नवलकिशोर रोड की ओर से कुछ हलचल की आवाज़ आ रही है।

लगता है, एक-डेढ़ बजे रात तक पानी राजेंद्रनगर पहुँचेगा। सोने की कोशिश करता हूँ। लेकिन नींद आएगी भी? नहीं, कांपोज की टिकिया अभी नहीं। कुछ लिखूँ?

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



किंतु क्या लिखूँ... कविता? शीर्षक बाढ़ आकुल प्रतीक्षा? धत् ! और

नींद नहीं, स्मृतियाँ आने लगीं-एक-एक कर। चलचित्र के बेतरतीब दृश्यों की तरह : 1947... मनिहारी (तब पूर्णिया, अब कटिहार जिला) के इलाके में गुरुजी (स्व. सतीनाथ भादुड़ी) के साथ गंगा मैया की बाढ़ से पीड़ित क्षेत्र में हम नाव पर जा रहे हैं। चारों ओर पानी ही पानी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

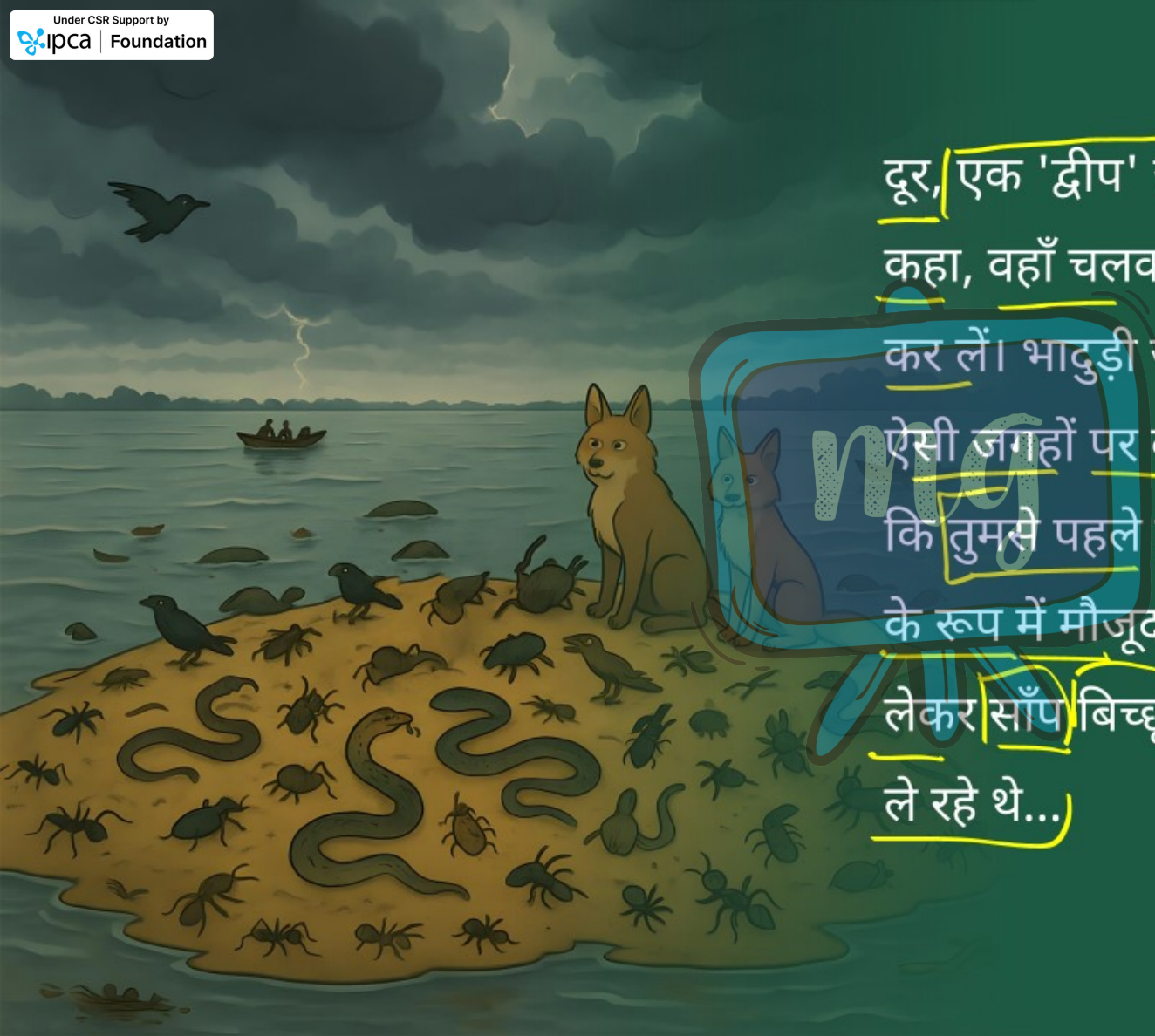

दूर, एक 'द्वीप' जैसा बालूचर दिखाई पड़ा। हमने कहा, वहाँ चलकर जरा चहलकदमी करके टाँगें सीधी कर लें। भादुड़ी जी कहते हैं- "किंतु, सावधान! ऐसी जगहों पर कदम रखने के पहले यह मत भूलना कि तुमसे पहले ही वहाँ हर तरह के प्राणी शरणार्थी के रूप में मौजूद मिलेंगे" और सचमुच चींटी-चींटे से लेकर साँप बिच्छू और लोमड़ी सियार तक यहाँ पनाह ले रहे थे...

Under CSR Support by
ipca | Foundation

सीखने के प्रतिफल (Learning Outcome)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

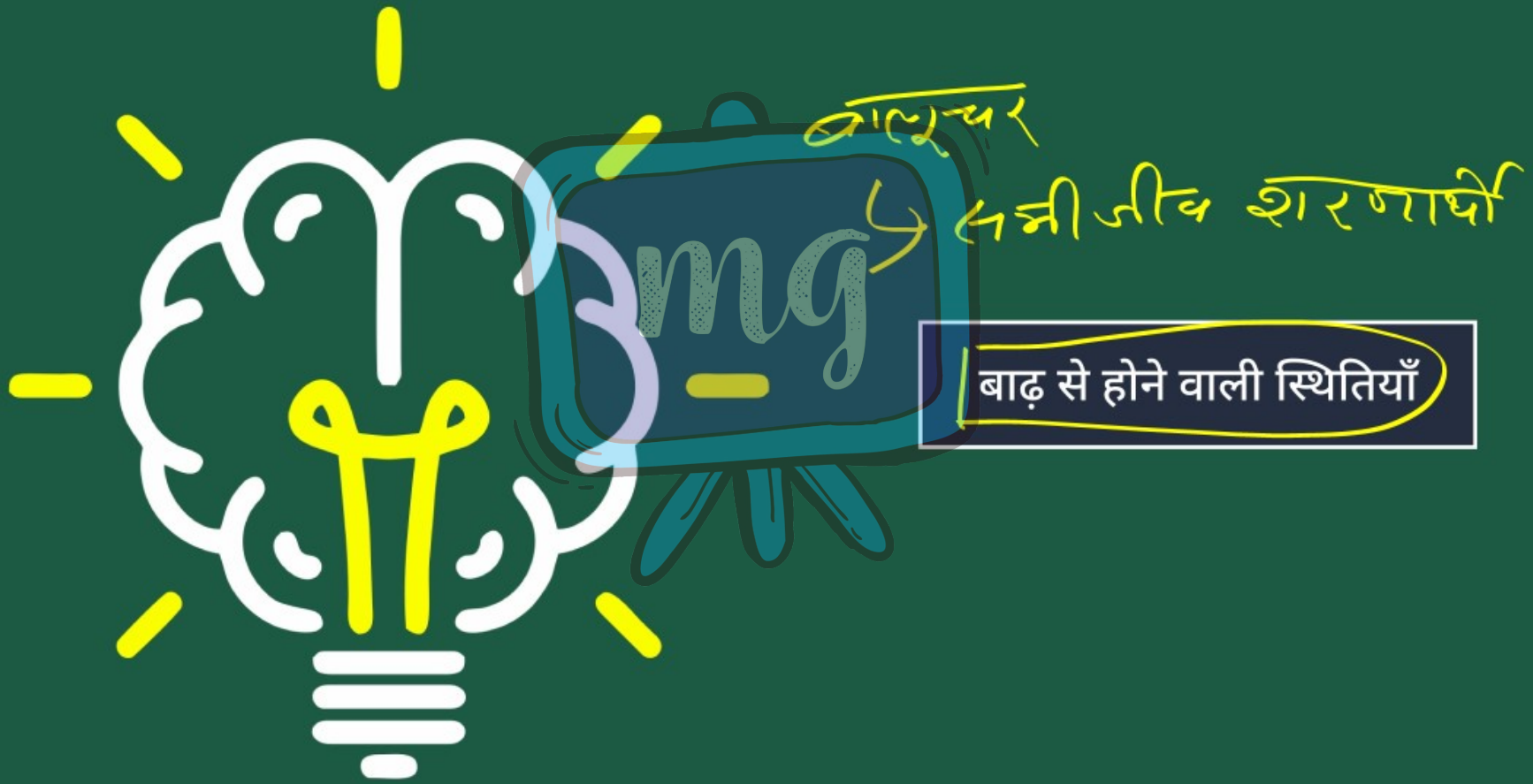

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1 लेखक ने गृहस्वामिनी से क्या पूछा?

अ पानी की स्थिति के बारे में

ब बिजली के बारे में

स गैस का हाल

द किरासन का मूल्य

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



2 लेखक के फ़्लैट के नीचे के दुकानदार ने क्या किया?

अ दुकान बंद कर दी

ब सामान बाँटना शुरू कर दिया

स कागज इकट्ठा करके जलाया

द पानी में नाव उतारी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



3 | लेखक को हलचल की आवाज़ किस दिशा से आ रही थी?

- अ उत्तर
- ब दक्षिण
- स पश्चिम
- द पूर्व

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



4 लेखक को किस वर्ष की स्मृति आई?

अ 1950

ब 1965

स 1947

द 1971

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



5 'बालूचर' पर जाने से पहले भादुड़ी जी ने किस बात की चेतावनी दी?

अ वहाँ गड्ढे होंगे

ब वहाँ पुलिस मौजूद होगी

स हर तरह के जानवर पहले से शरण लिए होंगे

द नाव नहीं लग सकती